Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. XV, Issue No. 5, July-2018, ISSN 2230-7540

शीतयुद्ध के बाद भारत-अमेरिकी संबंध

Sonu*

Research Scholar, Political Science, OPJS University, Churu, Rajasthan

----------X----------

शीतयुद्ध के अन्त, सोवियत संघ के बिखराव और खाड़ी युद्ध में संयुक्त राज्य अमेरिका के नेतृत्व में संयुक्त बल की विजय ने सम्पूर्ण विश्व को नई विश्व व्यवस्था की ओर ढ़केल दिया है। भारत और अमेरिकी सम्बन्धों में शीतयुद्ध के अन्त के साथ युगान्तकारी परिवर्तन परिलक्षित हो रहे हैं। शीतयुद्ध के अन्त के साथ अब दोनों देश एक-दूसरे से ईमानदारी से भूतकाल की संदेहपरक दृष्टि को त्यागकर खुलकर अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर बात कर सकते हैं। अमेरिका का सामरिक, महत्व कम हुआ है। प्रथम बार, अमेरिका दक्षिण एशिया के राष्ट्रों से सीधे संवाद बनाने की स्थिति में है। आर्थिक रूप में, साम्यवादी व्यवस्था के असफल होने के साथ भारत सरकार के समान विश्व के अन्य देश भी बाजारोन्मुख आर्थिक सुधारों की ओर उन्मुख हुए है। जोकि अमेरिका की इच्छा है शीतयुद्ध के बाद जो नई विश्व व्यवस्था की तस्वीर उभरकर सामने आ रही है उसकी कतिपय विशेषताओं में भूमण्डलीकरण, उदारीकरण, बाजारोन्मुख अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी, एक धुरवीय विश्व व्यवस्था की पुर्नरचना हो रही है। ऐसे में भारत अमेरिकी संबंधों में उपरोक्त कतिपय नई विश्व व्यवस्था को विशेषताओं के प्रकाश में नये मुद्दे मानवीय, आर्थिक, सामाजिक, और पर्यावरणीय दृष्टि से महत्वपूर्ण है। ये मुख्यतया सतत विकास से जुड़े हुए हैं।1

ऐसे मुद्दों में प्रमुख है: मानव अधिकार, विकास अधिकार, विश्व व्यापार, पर्यावरण संरक्षण, उत्तर-दक्षिण संवाद, निः शस्त्रीकरण, अन्तर्राष्ट्रीय आतंकवादी, नई अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की मांग, गरीबी उन्मूलन, टिकाऊ विकास, ज्यादा विदेश निवेश और प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण आदि। अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने 25 मार्च, 2000 को इस्लामाबाद में इसी ओर संकेत करते हुए जो कुछ कहा वह प्रासंगिक है। ''यह युग उन लोगों को पुरस्कृत नहीं करता जो खून से सरहदों की लकीर दुबार खींचने का फिजूल प्रयास करते हैं। यह युग उनका है जो सरहदों से आगे देखकर वाणिज्य और व्यापार में साझीदार बनाना चाहते हैं।

भारत-अमेरिकी संबंधों में 1990 के बाद निरन्तर नये समीकरणों की प्रति स्थापना हो रही है। नव-स्फूर्ति एवं नव-विश्वास के वातावरण का सृजन हो रहा है। अनेक राजनैतिक, आर्थिक सैन्य और अब आणविक समझौते से जहां हमें अपने राष्ट्रीय हितों को दृष्टि में रखकर सावधानी से कदम बढ़ाने है। वहीं अतीत के अनुभवों और भविष्य की रणनीति पर पर्याप्त पूर्वाभ्यास की आवश्यकता है।

"सितम्बर 1990 को को राष्ट्रपति बुश ने यह घोषणा की थी कि" "एक नई विश्व व्यवस्था उभर सकती है एक नये युग का उदय जो कि आतंक के खतरे से युक्त हो। 28 जनवरी, 1992 को उन्होंने फिर जोर देकर कहा कि" संयुक्त राज्य अमेरिका पश्चिम का नेता है जो कि अब विश्व का नेता बन गया है।

1990 के पूर्व अमेरिका के बारे में जो आर्थिक आशंकाये उभर कर आ रही थी कि अमेरिका आर्थिक रूप से विपन्नता की ओर बढ़ रहा है। इससे अमेरिका के आर्थिक पतन की आशंका अमेरिकियों को चिन्तित करने लगी थी। इस कारण अमेरिका के नेतृत्व पर प्रश्नचिन्ह लगाया जाने जगा। 1990 के मध्य में राष्ट्रपति बुश ने कहा था कि "अमेरिका के नेतृत्व का कोई विकल्प नहीं है। किसी को भी हमारे दृढ निश्चय और हमारे टिके रहने पर संदेह नहीं करना चाहिए।" 3 जनवरी 1991 में उन्होंने फिर कहना चाहा था कि "विगत वर्षों में हमने शीतयुद्ध और लम्बे युग को समाप्त करने में बड़ी प्रगति की है। हमारे सामने और हमारी भावी पीढ़ियों के सामने एक नये विश्व की रचना करने का अवसर है।" एक ऐसा विश्व जिसमें कानून का शासन हो और जिसमें जंगल का कानून नहीं चलता हो जब हम सफल होंगे- अवश्य सफल होंगे तब हमारे सामने एक वास्तवकि अवसर होगा एक नयी विश्व व्यवस्था का।''

1. अमेरिका के द्वारा नयी विश्व व्यवस्था के प्रमुख पांच लक्षणों की पहचान की गयी हैः

www.ignited.in

2. राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण।

3. जनतंत्र की सर्व व्यापकता।

4. मानवीय अधिकारों का संरक्षण।

5. नाभिकीय, रासायनिक एवं जैविक आयुधों के निर्माण एवं प्रसार पर प्रभाव नियन्त्रण।

6. संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रभाव शीलता में वृद्धि।

7. द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था के अन्त और नयी विश्व व्यवस्था के अभ्युदय की सम्भावना को सभी देश अपनी विदेश नीतियों का बदलती परिस्थितियों की परिवेश के अनुसार पुर्नमूल्यांकन करने लगे इस कारक का भारत अमेरिकी संबधों पर प्रभाव पड़ना अवश्यंभावी हो गया।4

यह ध्यातव्य है कि आज की इस उदीयमान एक ध्रुवीय नई विश्व व्यवस्था में संयुक्त राज्य अमेरिका ही एक मात्र आर्थिक और सैनिक शक्ति है। वह विश्व का एक मात्र पुलिसमैन, दादा या महानायक है। उसकी कोई बराबरी नहीं कर सकता, उसका कोई प्रतिद्वंद्वी नहीं, उसे कोई ललकार या चुनौती नहीं दे सकता। उसके पास इतनी ताकत है कि वह किसी भी देश को आदेश दे सकता है और आदेश न मानने पर उसे दण्डित भी कर सकता है। उसके पास परमाणु अस्त्रों का ही विपुल भण्डार नहीं है, अपितु आर्थिक क्षमता भी अत्यधिक है। वह राष्ट्रों पर दबाव डालकर उन्हें अपनी नीतियाँ बदलने के लिए मजबूर करने की स्थिति में है। वह अनुचित व्यापार के बहाने राष्ट्रों के आयात पर मनमानी व एक तरफ रूकावटे ला सकता है संयुक्त राष्ट्र संघ ही नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय और विश्व बैंक जैसी वित्तीय संस्थायें उसकी मुट्ठी में है।

पत्रकार सुरेन्द्र प्रताप सिंह लिखते हैं कि "सोवियत संघ सहितवारसा सन्धि के देशों के पतन तथा कुवैत-इराक युद्ध में कुवैत की ओर से निर्णायक भूमिका निभाने के बाद अमेरिका ने उस विश्व संरचना को पूरी तरह से बदल डाला अमेरिका न केवल अपने को संसार का एक मात्र सूबेदार मान रहा है बल्कि सचमुच एक सूबेदार के रूप में उभरा भी है।5

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. रतु डॉ. कुष्ण कुमार, भारतीय परमाणु परीक्षण और निःशस्त्रीकरण पोइन्टर पब्लिशर्स, व्यास बिल्डिंग, जयपुर, 1998

2. श्री वास्तव के, भारतीय परमाणु नीति शताब्दी की चुनौतियां विकास पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2002

3. यादव, डॉ. आर. एस. भारतीय विदेश नीति, न्यू एकेडमिक पब्लिशिंग कम्पनी, माई हीरा गेट जालन्धर।

4. मिश्र डॉ. सुरेन्द्र कुमार, "भारतीय परमाणु नीति निःशस्त्रीकरण व अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2006

5. गान नरोतम, "इण्डिया एण्ड यू एस: फ्राम स्ट्रक्जमेंट ऑफ इन्गेजमेंट सेज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

Corresponding Author

Sonu*

Research Scholar, Political Science, OPJS University, Churu, Rajasthan

E-Mail – bhardwajsonu80@gmail.com